

पाठ-सूची

पूर्वार्ध

गद्य भाग

विषय	पृष्ठ
१—विद्या की महिमा	१
२—गुरुजी की आज्ञा का पालन	३
३—उद्योग	४
४—परिश्रम	६
५—दया	८
६—शत्रु के धोखे में न आना	१०
७—सच्चनता का वर्तव्य	११
८—सत्यभाषण	१२
९—परोपकार	१५
१०—महादेव गोविन्द रानाडे	१७
११—पिता की आज्ञा का पालन (१)	१८
१२—" " (२)	२२
१३—निर्भय	२४

विषय

पद्यभाग

१—कवच की मारने
२—
३—कवच की मारने
४—कवच की मारने
५—विदुरकी
६—विषय की शक्ति
७—रामचन्द्र का गेह गेहना
८—हृदयविन्द सतत
९—
१०—
११—

उत्तरार्ध

पद्यभाग

१—रामचन्द्र का नाहन
२—रामचन्द्र का नाहन
३—रामचन्द्र का नाहन
४—रामचन्द्र का नाहन
५—रामचन्द्र का नाहन
६—रामचन्द्र का नाहन
७—रामचन्द्र का नाहन
८—रामचन्द्र का नाहन
९—रामचन्द्र का नाहन
१०—रामचन्द्र का नाहन

२—गुरुजी की आज्ञा का पालन

एक गुरुजी अपने घर पर बहुत से विद्यार्थियों को पढ़ाया करते थे । उनमें आरति नाम का एक विद्यार्थी गुरुजी के ही यहाँ रहता और वहाँ पढ़ा करता था । गुरुजी अपने विद्यार्थियों में बड़े परिश्रम के कार्य कराया करते थे । ऐसा वे इसलिए करते थे कि जिनमें विद्यार्थियों का बचपन से ही परिश्रम करने का अभ्यास हो जाय ।

एक दिन गुरुजी ने आरति को एक रस्ते को मेंट बाँधने की आज्ञा दी । गुरुजी की आज्ञा पाने ही आरति भट उठ कर रस्ते को चल दिया । वहाँ पहुँच कर वह धान के रस्ते को मेंट बाँधने लगा । उसने बड़े परिश्रम से चारों ओर को मेंटें तो बाँध दीं । परन्तु एक जगह थोड़ी सी मेंट उससे न बँध सकी । उस देश्वारे ने कटेदार मेंट बनाई, परन्तु पानी का बेल वहाँ इतना अधिक था कि वह जब बनाता तभी पानी मेंट को काट देता । अन्त में जब उसने देखा कि यह मेंट मर बाँधे न सकेगी तब वह आप ही वहाँ लोट गया जहाँ से पानी बाहर निकलता था । उसके लट जाने से रानी निकलना बन्द हो गया । वह कह पण्डित इसी प्रकार पानी रोक पड़ा रहा ।

जब मायकल दृष्टि तब गुरुजी ने आरति को न दण्ड कर और विचार्यय म जल के ऊपर कहा कि 'वद - दय' न के 'क' दोन कुँडल दून नदी के ऊपर कहा है।"

जाता है । उद्योग के बिना किसी का कुछ भी नहीं मिल सकता ।

मनुष्यों की बात जाने दोलिए, छोटे छोटे कीड़ों तक को न काम करते देखते हैं । शहद की मक्खी को देखिए, वह अपना छोटा जीव है । उन मक्खियों में से कुछ पुष्पों का रस न कर लाती हैं, कुछ रहने के लिए छत्ता लगाती हैं और कुछ दूध तैयार करती हैं । सारांश यह कि शहद की मक्खियों में कुछ न कुछ उद्योग अवश्य करती ही रहती हैं ।

बड़े दुःख की बात है कि छोटे छोटे कीड़े मकोड़े तो रात दिन उद्योग में लगे रहे और मनुष्य चुपचाप हाथ पर हाथ रख बैठे रहें । सुस्त बैठने के लिए मनुष्य नहीं बनाया गया । वह काम और उद्योग करने के ही लिए बनाया गया है । प्रालम्भ में पड़े रहने और उद्योग न करने से मनुष्य का कोई काम नहीं बन सकता ।

पर मैं अनेक प्रकार के खाने पीने के पदार्थ रक्ते हों, सामने औषधों का ढेर लग रहा हो, परन्तु उनके देखने से ही न तो किसी की भूख दूर होगी और न रोग शान्त होगा । भूख और रोग के दूर करने के लिए उनका उचित रीति से खाना पीना चाहिए । खाना पीना भी एक प्रकार का काम है । काम के लिए भी उद्योग की आवश्यकता है । अतएव कार्य-साधक के लिए मनुष्य को उद्योग करना चाहिए ।

पढ़ कर संसार में और कोई अच्छा काम नहीं । मनुष्य को उचित है कि जहाँ तक हो सके दूसरों का कष्ट दूर करने का प्रयत्न करे ।

सब दिन एक से नहीं रहते । आज जो नव प्रकार से सुख चैन में है, न जाने कल उस पर क्या विपत्ति आ पड़े । आपत्ति में यदि कोई किसी को वचनों से भी सहायता करता है तो इतने ही से उसे बहुत कुछ सहारा मिल जाता है ।

गाय, बैल आदि पशु अपना सुख दुःख किसी से कह नहीं सकते । इस कारण उन्हें कभी कष्ट न पहुँचाना चाहिए । किसी पंगु, मूले, अंधे और रोगी को देख कर उसकी हँसी न उड़ानी चाहिए । तुम्हारी सहायता से उनका बहुत कुछ भला हो सकता है ।

एक दिन काशी में एक लँगड़ा साधु मार्ग में पड़ा था । माघ का महीना था । बड़ा जाड़ा पड़ रहा था । मारे जाड़े के वह ठिठुर रहा था । उसी समय दयाशङ्कर नामक एक लड़का उसी मार्ग से जा रहा था । दयाशङ्कर को उस लँगड़े साधु पर दया आ गई । वह उसका कष्ट और न देख सका । दयाशङ्कर ने दया करके अपना कपड़ा उतार कर उसे ओढ़ने के लिए दे दिया ।

जब दयाशङ्कर अपने घर गया तब उसने कपड़ा दे देने का सब चान्दनी अपने पिता को सुना दिया । उसका पिता उसका काम बड़ा प्रशंसित हुआ । उसने उसका बड़ा प्यार



भागने लगी। लुगों ने कहा—“क्यों, क्यों, कहाँ चली ? भय तो कोई भय की बात नहीं है।” लानही ने कहा—“यह तो सब है, परन्तु कहीं इन कुत्तों ने भी तुन्दारों तरह दिँदोरा न सुना हो।”

७-सज्जनता का वर्ताव

अच्छे पुरुष उसके साथ अच्छी तरह वर्ताव किया करते हैं। वे सदा ऐसे ही बचन बोला करते हैं जिससे सबका चित्त प्रसन्न हो। भले पुरुष जब किसी से मिलते हैं तब उसका कुशल-समाचार पूछते हैं और सबका आदर-सत्कार करते हैं। इसी को सज्जनता का वर्ताव कहते हैं।

जिन मनुष्य की बाड़ी में नम्रता और मोठापन नहीं उसके साथ मिलने को किसी का मन नहीं चाहता। सब कोई उससे बचते ही रहते हैं। ऐसा मनुष्य शीघ्र ही संसार में बुराई का घर बन जाता है।

नमत्कार और प्रदान करके कुशल पूछने और अपनी मोठी बाड़ी से दूसरों को प्रसन्न करने में गाँठ काँ एक कौड़ी भी नहीं लगती। परन्तु ऐसा करने से लाभ बहुत होता है। इसी लिए सत्पुरुष दूसरों के साथ सदा सज्जनता का वर्ताव किया करते हैं।

जा कोई अपने घर भरे दानक साथ सज्जनता का वर्ताव

करना चाहिए । जो मिलन योग्य हों उनसे न मिलना और उनके साथ दुर्जनता का वर्ताव करना उचित नहीं । ऐसा करनेवालों की गिनती मजनों में नहीं हो सकती । जिसमें मज्जनता नहीं वह मज्जन कहायि नहीं हो सकता ।

मज्जनता का वर्ताव साधन के लिए उत्तम समुत्थों की संगति करनी चाहिए । अथ पुरुषों में मिल कर उनकी मज्जनता के वर्ताव का ज्ञान में दृष्टाना चाहिए ।

मज्जन पुरुषों का पहला पहचान यह है कि वे दूसरों की प्रतिष्ठा का ज्ञान स्वस्था करत हैं । वे अपने संगों को वा दृष्टा किया करत हैं और किसी में एक भाव अपराध भी इनका हो जाय न वे उसका क्षमा कर देने हैं ।

जो विचारों मज्जनता का वर्ताव करत हैं उनके सभी चरित्र हैं । वे महा मुक्त रहत हैं और कर्षों की प्रतिष्ठा होती है ।

८-मन्दभाषण

मन्द में वह जो मगन में होते बदले नहीं । मन्द के मन्द में मन्द मन्द में मन्द । मन्दों को जो भी वाद का उक्त है । मन्द के बदले मन्द की मगन में बने प्रतिष्ठा रहत है । मन्द को उचित है कि बने विचार ही मन्द । मन्द का मन्द मन्द मन्द को मन्द में मन्द है ।

लटकों, तुम नदी सत्य पोला करो। भूल से भी कभी झूठ दाव तुम से न निकाला करो। झूठ बोलोगे तो लोगों को दृष्टि में गिर जाओगे और फिर तुम्हारा विश्वास जाता रहेगा। यदि फिर सत्य दाव भी कहो तो फोड़ तुम्हारा विश्वास न करेगा। देखो, मैं तुम्हें एक सत्य बोलनेवाले लटकों का पुरस्कार सुनाता हूँ। तब उसे ध्यान देकर सुनो।

एक बार बहुत से सुनलमान पण्दाद गहर की जा रहे थे। पलते पलते वे एक जङ्गल में पहुँचे। सायंकाल हो गया था और सभी सो पड़ो दूर। जाड़ा ऐसे कड़ाके का पड़ रहा था कि नदके हाथ पाँव ठंढे जाते थे। वे लोग उस जङ्गल में जादो रहे थे कि इनमें से बहुत से दाकू उन पर दूट पड़े। इनका नारा मान पण्दाद दाकूओं ने धौन लिया।

उन्हीं पत्रियों ने एक छोटा सा मट्ठका भी पा। जब हाकूमो ने उनके पास पहुँच न पाया तब वे उनकी बगलें टटोलने लगे। समस्त स्त्रियाँ भी कुछ उनकी हाथ न लगा। तब एक हाकूम मट्ठके से पूछा—“क्या तेरे पास कुछ नहीं है ?” मट्ठका का भावराज ने उससे भट्ट कर दिया—“है हाँ।”

हनुमान ने समझा कि लटका हौं तो कर रहा है और नि
दूता — क्या है ? कहते हैं कि निराला कह दिया — "सलीम
रस, हनुमान ने कहा हुआ — क्या है ? कहते हैं कि निराला
"सलीम रस" — यह कहते हैं कि हनुमान ने कहा हुआ
"सलीम रस" — यह कहते हैं कि हनुमान ने कहा हुआ
"सलीम रस" — यह कहते हैं कि हनुमान ने कहा हुआ

मोहेंग ।” उनके साथ सब साथी हाकुओं ने भी प्रतिज्ञा कर ली कि अब हम किसी को कष्ट न देंगे । उन्होंने अपने सरदार से कहा—“जैसे आज तक आप बुराई में हमारे सरदार रहे वैसे ही अब भलाई में भी हमारे सरदार रहिए ।”

उन हाकुओं ने सारा माल यात्रियों को लौटा दिया और वे उसी समय से सुमार्ग पर चलने लगे ।

उस लड़के का नाम अब्दुलकादिर था । वह लड़का ईरान का एक बहुत बड़ा नामी साधु हो गया है ।

६—परोपकार

किसी राजा की सेना का एक निराही बड़ा बली और चतुर था । राजा उसको बड़ा प्रविष्टा करता था । राजा को वक्त पर इतना विश्वास था कि उसने सारा कान उसी पर छोड़ रखवा था । राजा जो कान करता सब उसी की सम्मति से ।

कुछ दिन तक तो वह निराही राज्य के प्रत्येक कान में मन मन से उद्योग करता रहा । परन्तु अन्त में उनके मन में यह आया कि राजा की राजगद्दी से उनका कान आप ही राजा बन बैठे । इसा इच्छा का पूरा करने के लिये वह, धीरे धीरे कुछ रूप में परिवर्तन करने का

यह परिवर्तन का नाम अब राजा का नाम चुन कर दिया । राजा

इस कारण मैंने चाहा कि कोई ऐसा दन्धन होना चाहिए जिसमें उसका सारा शरीर बँध जाय और वह दन्धन किसी के काटे न कट सके । बहुत कुछ सोच विचार के अनन्तर, उपकार या भलाई से अधिक और कोई दन्धन मेरी समझ में नहीं आया । कारण यह कि उपकार का दन्धन मन पर होता है और मन सारे शरीर का राजा है । जब मन दन्धन में डाल दिया गया तब उसके हाथ, पाँव आदि सारे अनुचर भी दन्धन में हो जाते हैं । उपकार के दन्धन से बँध कर उपकार करने-वाले को कभी कोई हानि नहीं पहुँचा सकता ।”

१०—महादेव गोविन्द रानाडे

विश्वार्थियो, मैं जानता हूँ, तुमने से कोई ही ऐसा होगा जिसने बंबई नगर का नाम न सुना हो । समुद्र के तट पर यह एक बहुत ही विराल नगर है । बंबई का ज्ञान, जो तुम खाते हो, पहले पहल इसी नगर से लाया गया था । बिलायत का बहुत सा वस्तु इसी नगर से यहाँ आता है । बंबई के समीप ही एक पूना नामक नगर है । यहाँ के एक महापुरुष का इत्थान्व सुनो । पहले यह उचित होगा कि उस महापुरुष का नाम बतला दिया जाय ।

उसका नाम महादेव गोविन्द रानाडे था । बचपन में वे यह दुर्घटना मना गूँगे के तरह चुपचाप बैठे रहा करते

नादा देख कर और वहाँ समझ कर कि कोई साधारण मनुष्य होगा, उनसे कहने लगे—“भैया, वनिक मेरे बोन को हाथ लगा दो” । यह सुनते ही उन्होंने बोन छठा कर बुद्धिपा के तिर पर रख दिया ।

देखा, वे कैसे मज्जन थे । यदि झार कोई इतने बड़े पद पर होता तो घरवा पर पांव भी न रखवा, दोभ्र उठाना वो बल्लग रहा, उन देवारी दोन हुदिया को झार झार उठा कर देखना भी नहीं । यदि रानाहे महाशय में ऐसे ऐसे तद्-गुण न होते वो भाव उनको इतनी प्रतिष्ठा कैसे देता ।

११-पिता की आज्ञा का पालन

भला ऐसा कौन होगा जो श्रीरामचन्द्रजी को क्या न जानता हो। ये अपने पिता को आजा से, अयोध्या को राजगद्दी अपने भाई भरत के लिए त्याग कर, चौदह वर्ष तरुवन में रहे। यह बात बहुत पुरानी है। अभी कुछ दिन हुए, एक राजकुमार ने ठोंक ऐसा हो कान कर दिखाया। यह किन्ना आश्चर्य का क्षण है कि यह भी श्रीरामचन्द्रजी का ही वंशज है। हमका ज्ञानान्त मन

[illegible]

मादा देख कर और यहाँ नमन कर कि कोई साधारण मनुष्य होगा, उनसे कहने लगे—“भैया, तनिक मेरे दोन्त को हाथ लगा दो” । यह सुनते ही उन्होंने दोन्त उठा कर बुढ़िया के तिर पर रख दिया ।

देखा, वे कैसे नमन थे । यदि और कोई इतने बड़े पद पर होता तो धरती पर पाँव भी न रखता, दोन्त उठाना तो झग रहा, उन देवियों की बुढ़िया की और आज्ञा उठा कर देखना भी नहीं । यदि राजाई नदामत में ऐसे ऐसे सद्गुरु न होते तो आज उनकी इतनी प्रतिष्ठा कैसे होती ।

११—पिता की आज्ञा का पालन

भला ऐसा कौन होगा जो श्रीरामचन्द्रजी को क्या न जानता हो । ये अपने पिता की आज्ञा से, प्रियदा की राजकुटी अपने भाई भरत के लिए त्याग कर, चारदह वर्ष वन में रहे । यह बात बहुत पुरानी है । अभी कुछ दिन हुए, एक राजकुमार ने ठीक ऐसा ही काम कर दिखाया । यह कितने आश्चर्य की बात है कि यह भी श्रीरामचन्द्रजी का ही वंशज था । इनका वृत्तान्त सुनो ।

मेवाड़ के राजा गजनिह के दो पुत्र थे । एक का नाम रामनिह था और दूसरे का जयनिह । ये दोनों बच्चे थे । रामनिह जयनिह से कुछ घटे पूर्व जन्मा था । इन

[illegible]

उस लड़के का नाम बीरेवर मुकर्जी था । वह बन्नु जिले स्कूल की एंट्रेंस कक्षा में पढ़ता था ।

१४—नासिरुद्दीन महमूद (१)

बादशाह नासिरुद्दीन का जीवन-वृत्तान्त पढ़ने से हम समझ सकते हैं कि जो मनुष्य सभ्य, सज्जन और सीधे सादे होते हैं चाहे वे बादशाह भी हो जायें तो भी उनको अभिमान नहीं होता और वे अपनी मज्जनना को नहीं छोड़ते । सदा सत्कर्म ही करते रहते हैं ।

नासिरुद्दीन महमूद सुलतान अलतमश का पौत्र था । पितामह के मर जाने पर उसके शत्रुओं ने उसे पकड़ लिया । उसके पकड़े जाने पर, देहली में जितने बादशाह हुए, उन्होंने अपनी प्रजा को ऐसा सताया कि वह सबकी सब विगाड़ खड़ी हुई और नासिरुद्दीन को छुड़ा कर उसने अपना बादशाह बना लिया ।

जब नासिरुद्दीन बादशाह बना तब राज्य के कार्यों में उमने बड़ी श्रुतियाँ पाईं । पहले बादशाहों की अमावधानी से यमुना के दक्षिणी भाग का सारा देश और मालवा पठानों के हाथ से निकल गया था । और सुगल सिन्ध नदी के पार उतर कर पठानों के देश पर बढ़ाई करना चाहते थे ।

नासिरुद्दीन ने सबसे पहले यह काम किया कि अपने

उम लड़के का नाम धीरे-धीरे मुकजी था । वह बन्नु जित्त
स्कूल की एंट्रेंस कक्षा में पढ़ता था ।

१४—नासिरुद्दीन महमूद (?)

बादशाह नासिरुद्दीन का जीवन-वृत्तान्त पढ़ने से हम
समझ सकते हैं कि जो मनुष्य सभ्य, सज्जन और सीधे सादे
होते हैं चाहे वे बादशाह भी हो जायें तो भी उनको अभिमान
नहीं होता और वे अपनी सज्जनता को नहीं छोड़ते । सदा
सत्कर्म ही करते रहते हैं ।

नासिरुद्दीन महमूद सुलतान अलतमश का पौत्र था ।
पितामह के मर जाने पर उसके शत्रुओं ने उसे पकड़ लिया ।
उसके पकड़े जाने पर, देहली में जितने बादशाह हुए, उन्होंने
अपनी प्रजा को ऐसा सताया कि वह सबकी सब थिगड़ खड़ी
हुई और नासिरुद्दीन को छुड़ा कर उसने अपना बादशाह
बना लिया ।

जब नासिरुद्दीन बादशाह बना सब राज्य के कार्यों में
उमने बड़ी धुटियाँ पाईं । पहले बादशाहों की असावधानी
से यमुना के दक्षिणी भाग का सारा देश और मानवा पठानों
के हाथ से निकल गया था । और मुगल सिन्ध नदी के पार
उतर कर पठानों के देश पर बढ़ाई करना चाहते थे ।

नासिरुद्दीन ने सबसे पहले यह काम किया कि अपने

न्वो गयासुद्दीन की सलाह से मुग़लों को आगे बढ़ने से रोक दिया और जो देश औरों ने दबा लिया था वह युद्ध रके सब लौटा दिया ।



१५—नासिरुद्दीन महमूद (२)

नासिरुद्दीन को विया की बड़ी चाह थी । वह विद्वानों का बड़ा सत्कार किया करता था । तरह तरह के ग्रन्थों के पढ़ने में वह रात दिन ऐसा लगा रहता था कि जेलखाने का कह भी उसे कुछ पुराना मालूम होता था । राज-काज से करते रहने पर भी उसने पुस्तकों का देखना-भालना नन्द न किया । उसने भारतवर्ष और ईरान का एक अच्छा विद्वांस तैयार कराया, जिसका नाम उसी के नाम पर "तय-हात नासिरी" रखवा गया ।

नासिरुद्दीन को इस बात का बड़ा ध्यान रहता था कि मेरे कार्य किसी का बिच न पड़े । एक दिन अपनी बर्नाई एक पुस्तक उसने अपने एक सरदार को दिखाई । सरदार ने उसमें कई एक अच्छाइयाँ बताईं । सरदार के कथनानुसार नासिरुद्दीन ने बैसा हो बना दिया । परन्तु जब सरदार बला गया तब नासिरुद्दीन ने बैसा हो बना दिया जैसा पढ़ने था ।

बर्नाई ने पूछा "यह क्या बात है ? जो आपने काट दिया था अब फिर वहीं क्या बना दिया ?" नासिरुद्दीन ने

कर बड़े बड़े कट सहवा हुआ देख-विदेख मिलने लगा । उनको बड़े बड़े दया थी । कभी वह नासवा जाता, कभी ग्वालिपर, और कभी किसी सबन बन में जा खिन्ना । बैरानखी का एक सहा निवृत्ति था । अहुतकातिन वल्लका नाम था । वह ग्वालिपर राज्य का एक बड़ा कर्मचारी था । वह भी इस आरकाड में बेश बंदूक कर बनने निवृत्ति के साथ खिन्ना था ।

एक दिन दोनों निवृत्ति एक दूर के गाँव बैठे हुए यह सोच रहे थे कि अब क्या करना चाहिए । इन्हीं में पठानों का एक सरदार कुछ सिपाहियों को साथ लिये हुए आ पहुँचा । उसने आते ही उन दोनों को घेर लिया और कहने लगा—“तुम कौन हो ? कहाँ से आये हो ? कहाँ जाओगे ?”

यह सुन अहुतकातिन ने कहा—“मर्द, हम यात्री हैं । मक्के शरीफ जाने के लिए गुजरात की ओर जा रहे हैं ।” यह सुन और जन में कुछ सोचकर सरदार ने फिर पूछा—“तुम हो कहाँ के ?” अहुतकातिन बोले जा—“बंगाल के ।”

बैरानखी और अहुतकातिन इन दोनों की भाषा बराबर थी । इनका रङ्ग रूप भी ऐसा मिलता जुलता था कि ये दोनों सहोदर भाई प्रतीत होते थे ।

सरदार के मन में कुछ सन्देह पैदा हुआ । उसने अपने सिपाहियों से पूछा—“तुम्हारे में कोई इनका पहचानता है ? मैं समझता हूँ कि ये बंगाल लोगों के सुन्वर हैं । इन पर एक



पालने पढ़ते हैं ? ऐसा न कहें वो बूढ़े माँ-बाप को कहां से तिलाँ ? आप अपनी बातें अपने पास रखिए । वस अब भलाई इसी में है, कि जो कुछ तुम्हारे पास हो सब चुपके से रख दो और अपना मार्ग पकड़ो । नहीं तो ऐसा लट्टू मारेंगा कि तिर फट जायगा ।”

रत्नाकर ने ये बातें कहीं वो बड़े क्रोध में, परन्तु साधु वो साधु ही था । उसने उसकी बातों को सुन कर कहा—“मैं तुमसे एक बात पूछता हूँ । क्या तुम्हारे माता-पिता जानते हैं कि तुम किस प्रकार धन कमा कर लाते हो ?” रत्नाकर ने कहा—“मैं पढ़ कुछ नहीं जानता ।”

साधु ने कहा—“अच्छा एक बार उनसे पूछ वो भाग्यो । देखो वो तुम्हारी यह कमाई उनके पसन्द है या नहीं ? यदि पसन्द हो वो आकर तुम्हें नार डालना । मैं साधु हूँ, असत्य कभी नहीं बोलता ।”

रत्नाकर ये बातें सुनते ही तिलतिला कर हँस पड़ा और कहने लगा—“बाह ! अच्छे कही ! मैं उधर पर जाऊँ, आप इधर बसते हों ! मैं आपकी बातों को खूब समझता हूँ । आप मुझे न तिलताइए, सीधे सीधे देना हो वो दे दो नहीं वो वैसा कहो ।”

२०—उपदेश का फल (३)

साधु ने उसकी बातों को कुछ भी पत्रां न को । उसका

अब तक कुसंगति में पड़ जाने के कारण, अज्ञान से, जो कुछ किया सो किया; परमात्मा से उसके लिए क्षमा माँगो। और रात-दिन उसकी भक्ति किया करो।”

देखो, साधु के उपदेश का रत्नाकर के हृदय पर ऐसा प्रभाव पड़ा कि वह बिलकुल सुधर गया। फिर वह परोपकार और पढ़ने लिखने में ही रात दिन लगा रहता था। होते होते उसका यश चारों ओर फैल गया और विद्या भी उसे इतनी अधिक आ गई कि उसने एक बड़ा ग्रन्थ निर्माप किया; जिसका नाम रामायण है। वही रत्नाकर वाल्मीकि के नाम से विख्यात हुआ। वाल्मीकि रामायण इन्हीं ने बनाई थी।

२१—महारानी कुन्ती की सज्जनता (१)

विद्यार्थियो, यदि तुमने दिहो देखो न होंगे तो उसका नाम तो अवश्य ही सुना होगा। क्योंकि वह एक बड़ा प्रसिद्ध और प्रार्थान नगरी है। भारतवर्ष के राजा और बादशाह सदा वहीं रहा करते थे।

प्राचीन काल में दिहो के पास ही एक बहुत बड़ा नगर था। उसका नाम हस्तिनापुर था। वहाँ का राजा दुर्योधन अपने पचरे भाई पाँचों पाण्डवों से बड़ी ईर्ष्या रखता था। दुर्योधन के द्वारा कुछ पाकर पाँचों पाण्डव अपनी माता कुन्ती को साथ लेकर वहाँ से चले गये। वे वेश बदल कर एक शहर में एक

अब तक कुसंगति में पड़ जाने के कारण, अज्ञान से, जो कुछ किया तो किया; परमात्मा से उसके लिए क्षमा माँगो। और रात-दिन उसकी भक्ति किया करो।”

देखो, साधु के उपदेश का रत्नाकर के हृदय पर ऐसा प्रभाव पड़ा कि वह बिलकुल सुधर गया। फिर वह परोपकार और पढ़ने लिखने में ही रात दिन लगा रहता था। होते-होते उसका यश चारों ओर फैल गया और विद्या भी उसे इतनी अधिक आई कि उसने एक बड़ा ग्रन्थ निर्माद किया; जिसका नाम रामायण है। वही रत्नाकर वाल्मीकि के नाम से विख्यात हुआ। वाल्मीकि रामायण इन्हीं ने बनाई थी।

२१—महारानी कुन्ती की सज्जनता (१)

विद्यार्थियो, यदि तुमने दिष्टो देखो न होंगे तो उसका नाम तो अवरय हो सुना होगा। क्योंकि वह एक बड़ा प्रसिद्ध और प्राचीन नगरी है। भारतवर्ष के राजा और बादशाह सदा यहाँ रहा करते थे।

प्राचीन काल में दिल्ली के पास ही एक बहुत बड़ा नगर था। उसका नाम दृष्टिनापुर था। वहाँ का राजा दुर्योधन अपने चचेरे भाई पाँचों पाण्डवों से बड़े ईर्ष्या रखता था। दुर्योधन के द्वारा ऊट पाकर पाँचों पाण्डव अपनी माता कुन्ती के साथ लेकर वहाँ से चले गये। वे वेश बदल कर एक गहर में एक

२२—महारानी कुन्ती की सज्जनता (२)

एक दिन ऐसा हुआ कि भीमसेन तो अपनी माता के पास रह गया और शेष चारों भाई भित्ति लेने चले गये । अकस्मात् ब्राह्मण के घर से रोने पीटने का शब्द सुनाई दिया । रुदन को सुनते ही कुन्ती ने ब्राह्मण के घर जाकर देखा तो ब्राह्मण अलग रो रहा है, ब्राह्मणी अलग सिर पीट रही है और उनके लड़के अलग बिलबिला रहे हैं । कुन्ती ने उनसे रोने का कारण पूछा, परन्तु रोने धोने में कौन किसी की सुनता था ।

जब कुन्ती ने बार बार रोने का कारण पूछने का लिए हठ किया तब ब्राह्मण ने कहा—“माई क्या पूछती हो क्या बताऊँ ! वह घुरा दिन आज आ ही गया कि या तो मैं स्वयं उस राक्षस के पास जाऊँ और छो-पुत्र को सदा के लिए दुख-सागर में निमग्न छोड़ जाऊँ या इनमें से किसी को भेजूँ ।

हम घर में कुल चार प्राणी ठहरे । बताओ, किसे राक्षस का भोजन बनाऊँ । यदि हममें से किसी एक की भी जान गई तो शेष तीनों बढ़प बढ़प कर मर जायेंगे । इससे तो यही अच्छा कि हम सब चारों एक साथ उसके पास चले जायें और वह एक साथ हम सबों को खा जाय ।”

ब्राह्मण की बातें सुन कर कुन्ती ने कहा—“यदि इतनी ही बात है तो तुम क्यों रोते हो ? मैं पाँच पुत्र हूँ । मैं उनमें से एक को राक्षस के पास भेज दूँगी ।”

२२—महारानी कुन्ती की सम्मनता (२)

एक दिन ऐसा हुआ कि भोजपेन से भयभीत राजा के पास
हो गया और रोने लगे और निद्रा होने लगे गये । अकस्मात्
आकाश से धर से रोने पड़ने का शब्द सुनाई दिया । राजा को
सुनते ही कुन्ती से आकाश के धर जाकर देखता तो आकाश भस्म
से रहा है, आकाश भस्म तिर पड़े रहों है और उनके लहके
भस्म बिलबिल रहे हैं । कुन्ती से उनके रोने का कारण पूछा,
जबसे रोने सोने से मैंने किसी को सुनाया था ।

तब कुन्ती ने धर धर रोने का कारण पूछने का लिए हठ
लिया तब आकाश से कहा—“मैंने क्या सुनते हो क्या बताऊँ !
वह दुरा दिन आज का हो गया कि रातों में सबों को राक्षस
के पास जाऊँ और लोभ को नष्ट के लिए दुःखस्वप्न में
निद्रा लेंगे जाऊँ या सुनने से किसी को नई ।

इन धर में कुछ बार जाऊँ लड़ें । बसको, जिसे राक्षस
का भोजन कराऊँ । यदि इनसे से किसी एक को भी मार
गूँ तो सोने सोने लड़ें लड़ें कर नर जाऊँ । इससे तो यही
अच्छ कि इन सब लड़ें एक साथ लड़के पास बने जाऊँ
और वह एक साथ इन सबों को खा जाय ।”

आकाश के बोलें सुन कर कुन्ती ने कहा—“यदि इसी
ही बात है तो तुम क्यों रोते हो । नो सोने सुन है । मैं जानने
से एक का राक्षस के पास नो हूँ ।

जो महर्षि के मन्त्रों मेंलों का मारा दुर्दान्त कुन्ती ने
लगा कर सुनाया ।

राष्ट्र के माघ लड़ने के लिए भीमसेन का फरमा हो
जाना सुन कर दुर्दिष्ट को बड़ी चिन्ता हुई, उनके मुख पर
बढ़ावा हो गई । वे मन ही मन ईश्वर से अपने भाई का
कल्याण मनाने लगे । उन्होंने कहा—“भीम को फरमा न
भेजना यद्विदुः सा ।”

दुर्दिष्ट को चिन्ता में पड़ा देख कर कुन्ती ने कहा—
एव, तुम चिन्ता न करो । भीम के घर की मैं जानती हूँ कि
कितना है । तुम नहीं जानते । तुम्हें तो उनके पराक्रम पर पूरा
भरोसा है । वह पराक्रम इस राष्ट्र को नष्ट कर नष्टकर
वहाँ धाड़लगा ।

इसके मन्त्रों को खरिद है कि जो कितने को कह में होये
तो वहीं एक हो लगे हमको महारथ को । जो मन्त्रों कुन्ती
के तुम से महारथ को है, राजेन्द्र महारथ को महारथ
करता है । तुम महारथ को । मैंने तो भीम को भेजा है तो
महारथ को महारथ को महारथ को महारथ को महारथ को ।

तुम यह सब विचार है कि राजेन्द्र महारथ को महारथ
को महारथ को महारथ को महारथ को महारथ को महारथ को
को महारथ को महारथ को महारथ को महारथ को महारथ को

को महारथ को महारथ को महारथ को महारथ को महारथ को
को महारथ को महारथ को महारथ को महारथ को महारथ को

की राख में के समान भोजन का सारा वृत्तान्त कुन्ती ने उनकी फट सुनाया ।

राख में भाव लट्ठने के लिए भोजन का बकेला हो जाना सुन कर पुर्बिष्टि की बड़ी चिन्ता हुई, उनके मुख पर लक्ष्मी छा गई । ये मन ही मन ईश्वर से अपने भाई का ब्याल मनाते लगे । उन्होंने कहा—“भोज की बकेला न भोजना चाहिए था ।”

पुर्बिष्टि की चिन्ता में पड़ा देर कर कुन्ती ने कहा—
पुत्र, तुम चिन्ता न करो । भोज के घर की मैं जानती हूँ कि
किन्ना है । तुम नहीं जानते । मुझको उनके परावन पर पूरा
भरोसा है । वह ब्याल उन राख की मार कर लकुल
वही ब्यालपना ।

चूँकि मनुष्य की दृष्टि है कि जो किसी को बच में देखे
तो जहाँ तक हो सके उनकी मद्दत करे । जो मनुष्य दूसरों
के दुःख में मद्दत करते हैं, परमेश्वर महा उनकी मद्दत
करता है । तुम परमात्मा मत । मैंने जो भोज को भेजा है वो
मन्दर हीन उनके दाढ़-दो के दाढ़ दवाने के लिए भेजा है ।

तुम वह हर विधान है कि परमेश्वर उनकी ब्याल मद्दत
करेगा । उन राख के दाढ़ दाढ़ से दाढ़ दाढ़ मन्दर-मन्दर
के दाढ़ दाढ़ करे ।

वही दाढ़ दाढ़ दाढ़ दाढ़ दाढ़ दाढ़ दाढ़ दाढ़ दाढ़ दाढ़
वही दाढ़ दाढ़ दाढ़ दाढ़ दाढ़ दाढ़ दाढ़ दाढ़ दाढ़ दाढ़ दाढ़

को राखने के समान भेजने का नारा पृथान्त कुन्ती ने उनकी कह सुनाया ।

राखन के साथ रहने के लिए भीमसेन का झकेला हो जाना सुन कर दुर्बिष्टि को दहो चिन्ता हुई, उनके मुख पर चक्षुषी छा गई । वे मन ही मन ईश्वर से अपने भाई का कृपा भगाने लगे । उन्होंने कहा—“भीम को झकेला न भेजना चाहिए था ।”

दुर्बिष्टि को चिन्ता में पड़ा देख कर कुन्ती ने कहा—
पुत्र, तुम चिन्ता न करो । भीम के घर को मैं जानती हूँ कि
कितना है । तुम नहीं जानते । मुझको उनके पराक्रम पर पूरा
भरोसा है । वह अवश्य इस राज्य को नार कर सहारा
दाई आलायक ।

प्रत्येक मनुष्य को ज्ञित है कि जो किसी को बच में देखे
तो उसे सब हो सबे सबको मारदण्ड करे । जो मनुष्य दूसरों
के दुःख में मारदण्ड करते हैं, परमेश्वर महा सबको मारदण्ड
करता है । तुम बड़ा हो मर । मैंने ही भीम को भेजा है तो
महामुख भीम सबके सबको के बच दवाने में निर भेजा है ।

तुम्हें यह हर विधान है कि परमेश्वर सबको अवश्य मार-
दण्ड करेगा । यह राज्य के लो जाने से लो मार-मिदमिदो,
• बच बच जाये ।

यह सब हो ही लो ही कि इस में राज्य को नार
कर मारदण्ड करे मार मारदण्ड न राज्य को नार हो

॥

और लड़कों में दामका ठोक ठोक भूख्य बत्ता दिया । भादक ने
 दुपकों में दाम निकाल कर दामको भागने रस दिया ।
 लड़का जब कपड़ों की लट्ट करने लगा तब देखता तो
 कपड़ा एक जगह से कटा हुआ था । यह देख कर दामने भादक
 से कहा—“भारें देख लो, कभी कट देना चाहता है, कपड़ा यहाँ
 पर तानिक गता कटा हुआ है । मैं तुमको जताये देता हूँ । पोछे
 से यह न कहना कि लड़कों ने मुझे धोखा दे दिया ।”
 भादक न देख कर कपड़ा लौटा दिया और अपने दाम
 पेट लिये ।

यहाँ पर दुकानदार भी बैठा हुआ से बाहेँ सुन रहा
 था । लड़कों की बात सुन कर वह बहुत विनम्र । दामने
 लड़के के दिल को सुझाया और दामने कहा—

“आपका लड़का क्या कहता है और गुराँ है । दुकान-
 दारों के काम का गुराँ है । वह गुराँ देवता नहीं जानता । यह
 काम आपका है कि आप के काम गुराँ के काम का है ।
 आपका काम यह है कि आप के काम से जो कुछ सुझाव
 है वह आप के काम से है ।”

दुकानदार ने कहा तुम का लड़का क्या कहता है—
 मैं का लड़का नहीं है । वह लड़का है जो दुकान का
 काम है वह लड़का है ।

दुकानदार ने कहा — यह लड़का क्या कहता है—
 मैं का लड़का नहीं है । वह लड़का है जो दुकान का

के पार द्वार हो और यह विचार कर लिया कि यमुना को अपने राज्य को सीमा बनाये । यह देख कर उस समय के गवर्नर जनरल सार्त मिंटो ने सर चार्ल्स नेटकाज़ को उनके पास भेजा । महाराजा ने नेटकाज़ साहब का बड़ा आदर-सत्कार किया और कुछ सोप समझ कर घेरेड़ों से मेल कर लिया । मई १८०६ ईसवी में उन्होंने सतलुज के पार से अपने सेना लौटा ली ।

रत्नोत्तमिंद के पराक्रम के आगे अकूमानिमान के पठानों को भी अपना मिर नाँवा करना पड़ा । उन्होंने काठुन के बाहराह साहयुजा में कोहनूर छोड़ा ले लिया था । इस द्वारे को ये सर्वदा अपने पास हो रखते थे ।

इनके पास सब निवा कर कोई दो लाख दान हजार सेना थी । अपने मैतियों को बुद्धविद्या सिखाने के लिए उन्होंने दूर के ब्रह्म से लोग नौकर रख छोड़े थे । उनमें जनरल बेनपुरा फ़ार्मीनी नबने तुमर थे ।

रत्नोत्तमिंद शीघ्र-शीघ्र में छोटे थे । इनकी एक छान भी शीउला के कारण नष्ट हो गई थी । इनकी छाहृति से ऐसा और रन ठकड़ा था कि युद्ध में इनके मानने कोई न टहर सकता था । भारी से भारी विजति में भी ये कभी न विपन्नते थे ।

इनकी राज मर के और मजबूत हो अपने अच्छे कपड़े

पहन कर चला करते थे शत्रु के घर मजबूत हो रहते

महाराजा रघुजीवसिंह ।

के पार हवार हो और यह विचार कर लिया कि यमुना
को अपने राज्य को लाना बनावे। यह देख कर उस समय के
गवर्नर जनरल लार्ड मिंटो ने सर चार्ल्स मैटकाफ को उनके
पास भेजा। महाराजा ने मैटकाफ साहब का बड़ा आदर-
नतकार किया और कुछ सोच समझ कर बैंगरों से नैल कर
लिया। सन् १८०६ ईसवी में उन्होंने सतलुज के पार से
अपनी सेना लौटा ली।

रजजोतविन्द के पराक्रम के भागें भरुगानिमान के पठानों
को भी अपना तिर नोवा करना पड़ा। इन्होंने काहुल के
बादशाह शाहगुला से काहदूर होरा में लिया था। इन होरे
को ये सर्वदा अपने पान हो रखते थे।
इनके पास सब लिया था।

इनके पास सब निजा कर कोई दो लाख दम हजार
सेना थी। अपने सैनिकों को कुछविषा निगानों के लिए
इन्होंने दूर के बहुत से लोग नाम्बर रख छोटें थे। इनने
जनरल बेंगलूर मालिकों सबने सुनने थे।
रखवावेनिंद होत-होत से

रखवाते हैं। इनको एक कानून
में बाँटा है। इनके अन्तर्गत दो
प्रकार के काम हैं। एक तो यह कि
इनका नाम रखना और दूसरा यह कि
इनका नाम रखने का अधिकार

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय
नमः शिवाय नमः शिवाय
नमः शिवाय नमः शिवाय

दुराई के बदले भलाई ।

सबो ने ७ जून के सन्ध्या समय ५२ वर्ष की अवस्था में
लोक लियार गये ।

४३

२६—दुराई के बदले भलाई ।

एक दिन एक ठाकुर नाहब अपनी चौपाल में बैठे थे ।
ने एक भाले द्वारा यका भूया पाला वपर भा निकला
र ठाकुर साहिब से कहने लगा—“भूय के नारे मेरा दन
कलवा है, कुछ खाने को मिल जाय, जिससे भागे चलने का
दारा हो ।” ठाकुर ने उसे झिड़क कर कहा, “बल, यहाँ
तेरे खाने को कुछ नहीं है ।” वह उन देवारे ने कहा, “घोड़ा
को नो हो चला दो” । ठाकुर साहिब भागे से बाहर हो गये
और कहने लगे, “दू यहाँ से जायगा कि नहीं; वहाँ वेंगे दूरी
हो जलौं वहाँ दू ?” यह सुन कर वह देवारा अपना सा ऊँह
कर चुनचाय बल दिया ।

घोड़े हो दिन पोंछे ठाकुर नाहब शिकार को बन में
गये । वहाँ रात भूय गये और भटकते भटकते एक भौंदा के
स का निकले । रात बहुत होत गां हो और उनका गाँव बहुत
दूर । इनमें भौंदा के मालिक ने उनके अपने यहाँ ठिका
र । वह एक गधे से रान भा कर गया और जो कुछ
उके गधे गधे के स भागे दया दिया । वह ठाकुर नाहब
ने कुछ वह उनके सोने के और पयल देखा का ऊपर से



महाराजा रामसिंह और एक बुढ़िया की कहानी । ५१

रिक्त और कोई न था । महाराजा प्यास से व्याकुल तो हो रहे थे, पहुँचते ही बुढ़िया से बोले—“माई, घोड़ा सा ठंडा पी पिला दे ।”

यह सुन कर बुढ़िया ने उठ कर जल से भरा हुआ एक ट्री का बर्तन ला रक्खा । उस शीतल जल को पान करके महाराजा की प्यास जाती रही । जल पीकर वे उस भोपड़ी में राम करने लगे ।

कुछ देर आराम करके महाराजा बुढ़िया से पूछने लगे—“महारे कोई है भी ? इस जंगल में तुम्हारा निर्वाह कैसे होता ?” बुढ़िया ने उत्तर में कहा—“बेटा, मेरे कोई नहीं है । एक था, परन्तु बारह वर्ष से उसका भी पता नहीं, न जाने ही चला गया । मैंने एक बार सुना था कि महाराजा रामसिंह के यहाँ एक पहाड़ी दुर्ग में रहता है ।

मेरे खाने पीने का कोई आसरा नहीं, यहाँ पैठी हुई मैं त्रियों को जल पिलाया करती हूँ । जो किसी ने कुछ दे दिया । कभी जंगल की लकड़ी या जड़ी बूटी कुछ बिक गई तो मैं सें लस्टम पस्टम अपने दिन काटती हूँ । सो अब मेरे किये यह भी नहीं होता । इस समय मैं ऐसे दुःख में हूँ कि परमेश्वर । करे कि शत्रु को भी ऐसा कष्ट हो । पुत्र की वियागाग्नि मुझ परलग हो जलाया करती है ।”

इतना कह कर बुढ़िया राने लगी । यह देख कर महाराजा

। परन्तु रघुपतिसिंह का हृदय उस समय पुत्र-दर्शन का सा से विकल हो रहा था। इसलिए वह साधियों के को सुना धनसुना करके घर की ओर चल ही दिया।

रघुपतिसिंह जब सायंकाल के समय अपने नगर में
 जा तब देखा कि समस्त नगर में सन्नाटा छाया हुआ है।
 के द्वार पर जाते ही पहरेवालों ने टोका—“कौन ?” रघु-
 सिंह ने निहट्टी कर कहा—“रघुपतिसिंह।”

पहरेवाले ने कहा—“बादशाह की आज्ञा है कि तुम जहाँ
मिला पकड़ लिये जाओ।”

रघुपतिसिंह ने कहा—“भाई, मेरा पुत्र बड़ा बीमार है। समय उसकी घटी घुरी दशा है। कुछ काल के लिए मुझे घर जाने दो। मैं अभी देख कर लौट आता हूँ। फिर तुम ही जोग करना। स्मरण रहे कि मैं राजपुत्र हूँ। सावित्र-मन्त्रान् अमन्य कभी न करूँगा।”

परवाला मित्रातूनच या परतूनही कः वादगाय का मना
भरती जान थाया था नव नव मना, मयक का कलाता
। यही रागी था रघुनाथगव का कलाता रघुनाथ वान
नकर उसका भा हृदय प्रान्त नर का कलाता रघुनाथ
रक उसने एक लम्बा लम्बा लम्बा कलाता — ६. यथा
उ थाया

जब राष्ट्रपतिभिन्न भावों में गढ़ा में दृष्टा 'क' मरुत' गता
कादर 'विक्रम' ह. 'ह' है उनका भाव 'मन' 'मन' 'मन' है

जायें । परन्तु रघुपतिसिंह का हृदय उस समय पुत्र-दर्शन को लालसा से विकल हो रहा था । इसलिए वह साधियों के कहने को सुना अननुना करके घर की ओर चल ही दिया ।

रघुपतिसिंह जब सायंकाल के समय अपने नगर में पहुँचा तब देखा कि सनत्त्व नगर में सन्नाटा छाया हुआ है ।

के द्वार पर जाते ही पहरेवाले ने टोका—“कौन ?” रघु-सिंह ने निहट्ट होकर कहा—“रघुपतिसिंह ।”

पहरेवाले ने कहा—“बादशाह की आज्ञा है कि तुम जहाँ मिलो पकड़ लिये जाओ ।”

रघुपतिसिंह ने कहा—“भाई, मेरा पुत्र बड़ा बीमार है । समय उसको बड़े दुरी दशा है । कुछ काल के लिए मुझे वर जाने दो । मैं अभी देख कर लौट आता हूँ । फिर तुम हे जो करना । स्मरण रहे कि मैं राजपुत्र हूँ, त्रिविध-सन्तान असत्य कभी न कहूँगा ।”

पहरेवाला सिपाही जब घर छोड़ कर बादशाह की सेना भरती होने आया था तब उस समय उसका भी एकलौता बहुव रोगी था । रघुपतिसिंह की कष्ट-रस-भरी बातें सुनकर उसका भी हृदय पिघल गया । अपने पुत्र की याद रके उसने एक लम्बा मांस लेकर कहा—“भैया जाओ, मैं आता ।”

जब रघुपतिसिंह लेकर गया तो देखा कि वह एक राजा के बिकल हो रहा है । उसने मांस लेकर कहा—

३४-प्रतिज्ञापालन (३)

इस घटना को हुए अभी कुछ ही समय बीता होगा कि गहियों का सरदार कुछ सैनिकों को साथ लेकर उधर आ रहा । उसने आते ही पहरेवाले से कहा—“रघुपतिसिंह का समाचार बताओ ।”

न जाने रघुपतिसिंह के घर आने और फिर लौट जाने का आचार उसे कहाँ से विदित हो गया था । पहरेवाले ने भी व वृत्तान्त सब सच सुना दिया । सरदार ने रघुपतिसिंह के ढ़ देने के अपराध में पहरेवाले को बाँध कर कैद कर दिया । उसके द्वार पर दोहरा पहरा बैठा दिया ।

रघुपतिसिंह को यह बात श्रात हो गई कि मेरे छोड़ देने-ला कैद कर लिया गया है । यह सुन कर उससे न रहा गया । वह तुरन्त शत्रु के सरदार के पास आकर उपस्थित हो गया । रघुपतिसिंह और उस पहरेवाले सिपाही दोनों को मारने की आज्ञा हुई ।

दूसरे दिन प्रातः काल ही सिपाही और रघुपतिसिंह दोनों साथ पाँव बँधे हुए सामने खड़े किये गये । उनके पास दो खड़ाद नज़्जा तलवार लेकर खड़े हो गये । वे आज्ञा को बाट खड़े हो रहे थे कि इतने में वहाँ पर उन सिपाहियों का सेनापति आ पहुँचा ।

सेनापति ने रघुपतिसिंह का आर उँगला उठा कर कहा—
‘सिपाहिया, तुम जानते हो यह कौन है ? यह रघुपतिसिंह है

अब क्षमा किया । जो मनुष्य ईश्वर से नहीं डरता वह सिपाही ही नहीं ।” इतना सुनते ही पहरेवाला सिपाही आनन्द में मग्न हो गया । हाथ पाँव बँधे होने पर भी वह बादशाह के चरणों में जा गिरा ।



फिर बादशाह ने रघुपतिसिंह को और आँख उठा कर कहा—“तुम्हें पहले इस बात का ज्ञान न था कि शूरवीर राज-पूत अपनी प्रतिज्ञापालन करने के लिए ऐसे वीर होते हैं । मैं तुम्हारे परिश्रम, शूरवीरता और प्रतिज्ञापालन से बड़ा प्रसन्न हुआ । जाओ, मैंने तुमको भी क्षमा किया । यदि अब भी तुम मेरे साथ शत्रुता करना चाहते हो तो जाओ, राणा प्रतापसिंह से जा मिलो ।”

रघुपतिसिंह बड़ी धीरता और निर्भयता से कहने लगा—“जिस रघुपतिसिंह को इतना परिश्रम करने पर भी आप न जीत सके थे, आज आपने अपने हृदय की हदारता दिखला कर उसे जीव लिया । यद्यपि आप मेरे शत्रु हैं, तथापि आपको गुण-प्राप्ति जानकर मैं प्रतिज्ञा करता हूँ कि अब मैं कभी आपका शत्रु बनकर तलवार न उठाऊँगा ।”

जो मनुष्य अपने वचनों और प्रतिज्ञाओं का पालन करते हैं और सत्य पर दृढ़ता से जमे रहते हैं और दूसरों के दुःखों में सदा उनकी सहायता करते हैं, परमेश्वर सदा उन पर प्रसन्न रहता है और उनकी सहायता करता है ।

पंचभाग

१—कयीर की साखी

जो नाहूँ काटा सुबै, ताहि बोद न फूल ।
 नाको फूल क फूल हैं, बाको हैं निरमूल ॥ १ ॥
 दरबान का न मनाइये, जाकी मोटी दाय ।
 मुई मान की भ्याम मो, मार ममम हो जाय ॥ २ ॥
 या दुनिया में भाइ के, छाड़ि दे नू पैठ ।
 खेना है सो खेइ लें, उटी जान है पैठ ॥ ३ ॥
 ऐसी बानी बेजिये, मन का भाग खोय ।
 खीरन को शोचन करे, भारी गीतय होय ॥ ४ ॥
 दया कान पर कीजिये, का पर निर्दय होय ।
 भाई के मय जोय है, कांरी कुंजर दोय ॥ ५ ॥
 जहाँ दया तई धर्म है, जहाँ लोभ तई पाय ।
 जहाँ लोभ तई कान है, जहाँ लज्जा तई भाय ॥ ६ ॥
 माय बरोबर ना नदी, झूठ बरोबर पाय ।
 जाके दिग्दय माय है, ताक  भाय ॥ ७ ॥
 मंगति कोत्रे मायु की, 
 मंगति कोत्रे मायु की

काल करे सो आज कर, आज करे सो अब ।
 पल में परल होयगी, बहुरि करोगे फय ॥८॥
 बुरा जो देखन मैं पला, बुरा न दोखे कोय ।
 जो दिल गोजे आपना, मुझता बुरा न कोय ॥१०॥

२—कबीर की साखी

जिन खोजा तिन पाइयाँ, गहरं पानी पैठ ।
 हाँ धीरो हँदन गई, रही किनारे बँठ ॥१॥
 साहब के दरबार में, फसी काहु की नाहिं ।
 बंदा मौज न पावही, धूक पाकरी नाहिं ॥२॥
 साहब तुम न विनारियो, लाग्य लोग मिल जाहिं ।
 हमसे तुमका पटुव है, तुमने हमका नाहिं ॥३॥
 जाको राखे नाह्यो, मारि न नकिट कोय ।
 बार न पाका करि सकै, जो जग धरो होय ॥४॥
 साहब सो सब होव है, बंदे मो कछु नाहिं ।
 राई सो पवंत करे, पवंत राई नाहिं ॥५॥
 दुख में सुनिरन मद करे, सुख में करे न कोय ।
 सुख में जो सुनिरन करे, दुख काहे का होय ॥६॥
 एकहि माथे सब माथे, सब माथे सब जाय ।
 जो नू मीधे मूल के, कहे कहे साहब ॥७॥

क्षरे द्रिस्त जे काहु की, ता में लट भर दान ।
 पर विद्या की द्रिस्त घर, जासी हो जग मान ॥७॥
 प्रीति रीति दुख गूल हैं, मैं कीन्हों निरधार ।
 प्रीति भली भगवान की, जाते हो भवपार ॥८॥
 भलो न जग में त्रास कोउ, त्रास दुःख को गूल ।
 पर गुरु पितु के त्रास से, मिटे क्लेश को गूल ॥९॥
 बुरे मागिबो जगत में, जाते हो भवमान ।
 चमा मागिबो ईश ते, भली यही कर शान ॥१०॥

— —

४—श्रम और संपत्ति

[मुकुन्दलाल शास्त्री-कृत शिवाकौमुदी से]

जे जग में श्रम ते विविध, विद्याधन पित लाइ ।
 संचहिं करहिं सुजान ते, सुख पावें मन भाइ ॥१॥
 श्रम से विद्या पाइये, श्रम ही से धन होइ ।
 श्रम ही से सुख होत है, श्रमविन लहे न कोइ ॥२॥
 श्रम ही से अधिकार पुनि, लहत मनुज अधिकाय ।
 विन श्रम कारज होय नहिं, श्रम से दुःख नसाइ ॥३॥
 श्रमी पुरुष संपत्ति लहे, श्रमी सुयश भर धाम ।
 श्रम ही से या जगत में, शान लहे अभिराम ॥४॥
 श्रम करि जे विद्या पढ़े, मनुज मान तजि भाइ ।
 त सुख लहे अयास विन, संपत्ति अवसर पाइ ॥५॥

संगति ही से लोक में, अधिक होइ विरवास ।
 संगति दिन या रात्रि में, होइ प्रवीण विनास ॥ १७ ॥
 संगति से व्यवहार सब, सब लोक पर लोक ।
 दिन संगति से होव है, राजसभा में रोक ॥ १८ ॥
 इहि कारन उचन पुरुष, श्रम कर जेहि वित ।
 इह समय में बहुत सुख, नंगै सदा सुविच ॥ १९ ॥
 अधिक ज्ञान से जो पुरुष, सब करहि नन भाइ ।
 परहि विराति को खानि में, पुनि पीछे पड़िवाइ ॥ २० ॥

५—विदुरनीति

[बाबू गोपालचन्द्र वनान गिरधरदास भदुवादिब]
 नरनाथ नतव कुमन्व सो, साधु कृतंगति पाय ।
 दिनसत सुव भविष्यार सो, द्विज दिन पढ़े नलाय ॥ १ ॥
 पावक बैठे रोग शून, मनमेंहुँ राखिय नाहि ।
 ये सोइ हैं बड़ाहि पुनि, महा पवन सो जाहि ॥ २ ॥
 लौन करिनि अवरुन नदी, ठन नाहि चल समान
 लौरय नाहि नन शुद्धि मन, विद्या मन धन मान ॥ ३ ॥
 ज्ञा में पुन अवलोकिबे, करिय ताहि स्वाकार
 बाल बचन हैं करिय सो, होय मोहि भदुमार ॥ ४ ॥
 सकल वस्तु समझ करै, भावै कोई दिन कान
 समय परै पर ना निहै, नाहो नरचे दान ॥ ५ ॥

विदुरनीति ।

संपति हो से लोक में, अधिक होइ विरवास्त ।
संपति बिन या जगत में, होइ प्रवांत विनास्त ॥ १७ ॥
संपति से व्यवहार सब, सबै लोक पर लोक ।
बिन संपति के होत है, राजसभा में रोक ॥ १८ ॥
इहि कारण उचन पुरुष, श्रम कर जोरैं वित्त ।
वृद्ध सनय में बहुत सुख, भोगैं सदा सुचित्त ॥ १९ ॥
अधिक लाभ से जो पुरुष, खर्व करहिं मन भाइ ।
नहिं विपति को स्थानि में, पुनि पोछे पछिवाइ ॥ २० ॥

५—विदुरनीति

[बाबू गोपालचन्द्र उपनाम गिरधरदास अनुवादित]
नरपति नस्तव कृमन्त्र सो, साधु कुसंगति पाय ।
दिननव सुव भवि प्यार सो, द्विज बिन पड़े नसाय ॥ १ ॥
पावक ईरो रोग शून, मपनेहुँ राखिय नहिं ।
ये छोड़े हूँ बढ़हिं पुनि, महा रतन सो जाहिं ॥ २ ॥
लोभ सरित्त भवगुन नहो, तर नहिं चलय मनान ।
तोरय नहिं मन-शुद्धि मन, विद्या मन धन भान ॥ ३ ॥
जा में गुन अवलोकिये, करिय ताहि स्वाकार ।
बाल-बचन हूँ करिय जो, होय नानि अनुमार ॥ ४ ॥
नकल बस्तु समष्ट करै, आवै फाँद दिन कान ।
मन परै पर ना निर्मै, नादों गरबे दान ॥ ५ ॥

जानि सबै गति ईश की, करै न कहूँ पाप ।
 सहि बराबर लगत को, देखत है वह आप ॥ ॥
 सुन के दुर्जन के वचन, हो रहिये छुपचाप ।
 करै जो समता राम की, नाच कहावै आप ॥ ॥
 मूठ कहूँ नहि बोलिए, मूठ पाप कर मूल ।
 मूठे को कोउ जगत नै, करै प्रतीति न मूल ॥ ॥

७-रामचन्द्र का गेद खेलना

[रामचन्द्रिका से]

एक काल भवि रूप निधान
 खेलन को निकरे चौगान ।
 हाथ धनुष भवि सुन्दर रूप,
 संग लिए सब सोदर भूष ॥
 बाँधों सब असवारिन भरो,
 हय हाथिन सों सोहत खरो ।
 वर-मुँदन सों सरिता भली;
 मानों मिलन समुद्रहि चली ॥
 यहि विधि गये राम चौगान;
 सावकारा सब भूमि समान ।
 शोभत एक कोस परिमान,
 रथों रथि रथपर चौगान ॥



अपना दाई पन्ना की सिरसता में महलों में रहता था। एक दिन जैम हो पन्ना ने उदयसिंह को खिन्ना पिना कर सुनाया, वैम ही महल में कुछ राने पीटने का शब्द सुनाई दिया पन्ना ने नाई स जा उदयसिंह का जूठा उठाने आया था पृथ्वा—“यह कौन रांता है ?” नाई ने घबरा कर कहा—“राना बनवीर ने विक्रमाजीत को मार डाला ।”

इतना सुनते ही पन्ना घर घर कांपने लगी। यह सावः लगी कि बनवीर ने जब विक्रमाजीत को मार डाला, तब उदयसिंह को कब जीता छोड़ सकवा है ? उदयसिंह के जीवित रहने पर मदा उसे वही रांका बनौ रहेगी कि बड़ा होकर कई बह हमसे राज न लीन ले ।

दय में अनोखी स्वामिभक्ति विराजमान थी । इसलिए अपने
के मरने का उसे कुछ भी शोक न हुआ । पन्ना उसी समय
रमिंद को टोकरी में लिप्या कर नाई को साथ लेकर चित्तौर
नकाश खड़ी हुई । वे दोनों कमलमीर के ठाकुर के पास जा
ये । वहाँ बदनरिंद को बहुत आराम से रक्खा । वहीं
रमिंद बड़ा होने पर चित्तौर का राजा हुआ ।

४-भले घुरे की पहचान

जिस परमेश्वर ने हम सबको पैदा किया है और हमारे
एक तरह तरह के पदार्थ संसार में पैदा किये हैं वह यही
ब्रह्मा है कि यही गुरुदेव धर्मात्मा, सत्य और परंपरायी
है । जिस प्रकार ब्रह्मा-विष्णु अपने पुत्र से यही प्रसन्न रहते हैं
और जो पर यही दया दिखाया करते हैं, इसी प्रकार
ब्रह्मा, विष्णु और परंपरायी गुरुदेवों से सब
पदार्थ पैदा हैं और इनकी सहायता किया करता है ।

परमेश्वर ने हमारे हृदय में एक ऐसी शक्ति दी है कि जब
हम कोई काम करते हैं वह सब कुछ हमारे हाथ में है कि सब काम
हमें ही करने पड़ते हैं और हम ही सब काम
कर सकते हैं कि जो हम काम करने के लिए हमारे
हृदय में रखे हैं । सब काम हमारे हृदय में रखे हैं
कि सब काम हमारे हाथ में है कि सब काम

हृदय में अनोखी स्वामिभक्ति विराजमान थी । इसलिए अपने
के मरने का उसे कुछ भी शोक न हुआ । पन्ना वसी समय
दरसिंह को दोकरो में छिपा कर नार्ई को साथ लेकर चित्तौर
निकल खड़ा हुई । वे दोनों कमलनौर के ठाकुर के पास जा
हुंसे । वनने बदरसिंह को बहुत आराम से रक्खा । वही
दरसिंह बड़ा होने पर चित्तौर का राजा हुआ ।

४-भले दुरे की पहचान

जिस परमेश्वर ने हम सबको पैदा किया है और हमारे
लिए तरह तरह के पदार्थ संसार में पैदा किये हैं वह यही
आदता है कि सभी मनुष्य धर्मात्मा, सज्जन और परोपकारी
हों । जिन प्रकार माता-पिता अपने पुत्र से सदा प्रसन्न रहते हैं
और उन पर बड़ी दया दिखलाया करते हैं, इसी प्रकार
परमात्मा भी धर्मात्मा, सज्जन और परोपकारी मनुष्यों से सदा
प्रसन्न रहता है और उनको सदा सहायता किया करता है ।

परमेश्वर ने हमारे हृदय में एक ऐसी शक्ति दी है कि जब
हम कोई काम करते हैं तब वह दुरुन्त बदला देती है कि यह काम
धर्म है या अधर्म, अच्छा है या बुरा । जब हम कोई ऐसा काम
कर सकते हैं कि जो हमें बाना अनुचित या तब हम दोष
बहुत पहचाना करते हैं । हम मनुष्य हमारे हृदय में एक प्रकार
का दण्ड बना करता है । इसका कारण यह है कि वह शक्ति

पटना) पहुँचे । वहाँ राजा विन्ध्यसार इनसे मिलने आये और हुत सा धन भेंट करने लगे परन्तु इन्होंने कहा—“मुझे धन तो इच्छा नहीं । मैंने भगवान् के लिए सब घर-बार छोड़ दिया है ।”

बुद्धजी ने गया में जाकर वहाँ के प्रसिद्ध विद्वानों से छहों लाख पढ़े । इससे भी जब इनको पूरी शान्ति न मिली तब ये गाँव शिष्यों को साथ लेकर जङ्गल में चले और वहाँ खाना पीना छोड़ कर भगवद्भजन में मग्न रहने लगे । परन्तु शान्ति फिर भी न मिली । उस समय इनको ज्ञान हो गया कि शरीर की शक्ति घटने से बुद्धि की शक्ति भी कम हो जाती है । बुद्धजी की इस प्रकार की स्थिर वृत्ति देख कर शिष्यों ने उनका साथ छोड़ दिया ।

एक दिन एक पीपल के नीचे बैठ कर बुद्धजी ने यह निश्चय कर लिया कि अब मुझे क्या करना चाहिए । उसी दिन से उन्होंने बुद्ध पदवी पाई ।

सबसे पहले कारीं पहुँच कर सारनाथ के पास ये लांगों को समझाने लगे कि सब जीवों पर दया करो ।

कुछ दिन के बाद राजगढ़ के राजा विन्ध्यमार इनके मत में आ गये । परन्तु इस पर इनके पुत्र ने रुष्ट होकर इन्हें मार डाला । परन्तु बुद्धजी जब फिर भ्रमण करने हुए राजगढ़ गये तो वह स्वयं भी उनका चेला हो गया ।

इसी प्रकार बुद्ध जी लागा कर अपने धर्म की बातें सिखाने

रहे । महर्षों मनुष्य उनके चले हो गये । घाज-कम संगार
जितने बौद्धमतानुयायी हैं उतने भीर किसी मत के
नहीं हैं । दो सदस्य वर्ष पूर्व हमारे देश में उनका मत बहुत
फैला हुआ था । अब भी चीन, जापान, म्यांमा, स्वाम और
हमारे दूसरे देशों में यह मत अधिकता से पाया जाता है ।

मृत्यु है संगार में सब प्राणियों पर दया करना ही उचित
है । अग्नी वर्ष की आयु में बुद्धजी ने इस लोक को छोड़
निर्वाण प्राप्त किया ।

—

६—कोई काम बिना सोचे समझे न करना चाहिए

एक ब्राह्मण को शिकार खेलने का बहुत अभ्यसन था ।
उमने एक बाण पास रक्खा था । वह उसे बड़ा चाहता था ।
एक दिन वह बाण को साब सेकर शिकार को चला । जंगल में
घुँस कर एक दिग्गज के पीछे दगने पोंका बाण दिया । बहुत
दूर तक पोंका मगा, परन्तु दिग्गज दाय न धाया । निदान वह
बक कर बैठ गया और जंगल में व्याकुल होकर पीड़ित होकर
हवा चकर जल की ओर जाने लगा । ओजना भाजना एक
बहादुर के नीचे आ पहुँचा ।

दस वर्षों में बुँद बुँद करके बड़ा निर्मल जल टपक
रहा था । उसे देख कर ब्राह्मण ने एक बड़ा निराश का

कोई काम बिना सोचे समझे न करना चाहिए । ८२

जल के नीचे रख दिया । जब कटोरा भर गया और बादशाह ने पीना चाहा तभी बाज़ ने पर मार कर डम गिरा दिया । बादशाह ने फिर कटोरा पानी से भरा और पीना ही चाहा था कि बाज़ ने फिर पर मार कर गिरा दिया । बादशाह प्यास से बड़ा व्याकुल था । उसने क्रोध में भर कर बाज़ को पृथ्वी पर पटक दिया । बाज़ पृथ्वी पर गिरते ही मर गया ।

रत्न ने बादशाह का एक नौकर, जो पीछे रह गया था, को पकड़ा । उसने आकर देखा कि बाज़ मरा पड़ा है और बादशाह प्यास से व्याकुल हो रहा है । नौकर ने गिराई निकाल कर अपनी सुराही में से पानी भर कर बादशाह को सामने किया । बादशाह ने कहा—“जो निर्मल पानी पीने में संतुष्ट रहता है ऊपर जाकर उसका पद मरता है ।”

नौकर पहाड़ पर गया, वहाँ क्या देखे ?
छोटे बालों से घोड़ा घोड़ा पानी निकल रहा है ।
पर एक मरा हुआ बिल्लू मरा पड़ा है । उसका शरीर
निर्गल रक्त बहती है वह पानी में निमज्जित है ।
तक रहा है ।
यह देख कर नौकर ने बादशाह के पास आकर कहा
कि नौकर कृतज्ञ है कि उसने बादशाह को सुराही का
पानी पीने का अवसर दिया । बादशाह ने कहा कि
उसकी आज्ञा मानने के लिए मैंने ऐसा किया ।

विद्यार्थी को तो भयपूर्व शिक्षा देने हैं पर
 १. को शिक्षा का दूसरा परम प्रकृति, जीवन का सद
 २. को शिक्षा का दूसरा परम प्रकृति, जीवन का सद
 ३. को शिक्षा का दूसरा परम प्रकृति, जीवन का सद
 ४. को शिक्षा का दूसरा परम प्रकृति, जीवन का सद
 ५. को शिक्षा का दूसरा परम प्रकृति, जीवन का सद
 ६. को शिक्षा का दूसरा परम प्रकृति, जीवन का सद
 ७. को शिक्षा का दूसरा परम प्रकृति, जीवन का सद
 ८. को शिक्षा का दूसरा परम प्रकृति, जीवन का सद
 ९. को शिक्षा का दूसरा परम प्रकृति, जीवन का सद
 १०. को शिक्षा का दूसरा परम प्रकृति, जीवन का सद

1. 2. 3. 4. 5. 6. 7. 8. 9. 10. 11. 12. 13. 14. 15. 16. 17. 18. 19. 20. 21. 22. 23. 24. 25. 26. 27. 28. 29. 30. 31. 32. 33. 34. 35. 36. 37. 38. 39. 40. 41. 42. 43. 44. 45. 46. 47. 48. 49. 50. 51. 52. 53. 54. 55. 56. 57. 58. 59. 60. 61. 62. 63. 64. 65. 66. 67. 68. 69. 70. 71. 72. 73. 74. 75. 76. 77. 78. 79. 80. 81. 82. 83. 84. 85. 86. 87. 88. 89. 90. 91. 92. 93. 94. 95. 96. 97. 98. 99. 100.

[illegible]

मनन के नष्ट होने का अनुशासन उनके हृदय को स्पर्श तक नहीं
 पाता। जीवन के नाश युद्ध करने के लिए सुनजित युवक
 इन विन विन नियमों को अवलम्बन करके समय के सद-
 धारण करने पर सफलमनोरथ हो सकते हैं, इस विषय में
 एक बार हृदय नकाराने नीचे लिखी प्रणाली के अनुसार
 मन करने की आज्ञा दी है—

(१) दृष्ट में कानों को एक साथ करने का सहज उपाय
 है कि एक बार एक ही काम को करो।

(२) जो काम तुरन्त पूरा करने योग्य है उसे उसी समय
 कर लो।

(३) जिस काम को आज्ञा करना है उसे बल के लिए
 कर लो।

(४) जो काम अपने बिन्दु होता हो, उसे दूसरे के बारे में
 मत सोचो।

(५) व्यवहार में जिसकी जरूरी काम पूरा किया चाहते,
 करना ही चाहते, विचार कर लो।

(६) यदि कोई काम पूरा किया चाहते हो तो उसे ही
 कर लो।

उक्त नियमों के अनुसार ही जो कार्य कर लो, मनो के काम

कर लो।

उक्त नियमों के अनुसार ही जो कार्य कर लो, मनो के काम

कर लो।

पद्यभाग

१—चृन्दविनोद सतसई

मान होत है गुनन ते, गुन बिन मान न होय ।
 शुक सारों राखै सबै, काग न राखै कोय ॥१॥
 बुरे लगत सित के वचन, हिये विचारो भाष ।
 कड़वा भेषज बिन पिये, मिटे न तन को ताप ॥२॥
 रहे समीप बढेन के, होत बढो हित नेल ।
 सबहो जानत बढत है, वृक्ष घरावर बेल ॥३॥
 हितहु को कहिये न तिहि, जो नर होय अवोष ।
 क्यों नकटे को भारसी, होत दिखाये कोष ॥४॥
 भोछे नर को प्रीति को, दोन्हीं रीति बसाय ।
 जैसे छोछल ताल जल, पटत पटत पट जाय ॥५॥
 जिहि प्रसंग दुषट संगै, तजिये ताको भाष ॥६॥
 मदिरा मानत है जगत दुष कपाली हाथ ॥७॥
 जक संग दुषट दुः करि विहिं पहिचानि
 जैसे मान दुष मर मरि मरि पारो पानि ॥८॥
 को नर दुष पर केन पारि क
 १ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७ १८ १९ २० २१ २२ २३ २४ २५ २६ २७ २८ २९ ३० ३१ ३२ ३३ ३४ ३५ ३६ ३७ ३८ ३९ ४० ४१ ४२ ४३ ४४ ४५ ४६ ४७ ४८ ४९ ५० ५१ ५२ ५३ ५४ ५५ ५६ ५७ ५८ ५९ ६० ६१ ६२ ६३ ६४ ६५ ६६ ६७ ६८ ६९ ७० ७१ ७२ ७३ ७४ ७५ ७६ ७७ ७८ ७९ ८० ८१ ८२ ८३ ८४ ८५ ८६ ८७ ८८ ८९ ९० ९१ ९२ ९३ ९४ ९५ ९६ ९७ ९८ ९९ १००

हिमन" वे नर मर चुके, जे फट्टे मांगन जाहिं ।
 ते पहिले वे मुए, जिन मुख निकसत नाहिं ॥८॥
 नय दशा कुल देख के, सदै करत सम्मान ।
 हिमन" दीन अनाथ को, तुम पित को भगवान ॥९॥

३—रहीम के दोहे

हिमन" चुप हूँ घँठिए, देखि दिनन को फेर ।
 । नोकै दिन आय हँ, घनत न लगिहँ घेर ॥१॥
 हिमन" नीचन संग घसि, लगत कलंक न काहि १
 । फलारि न हाथ लखि, मद समझहि सब ताहि ॥२॥
 हिमन" निज मन की विधा, मनही राखी गोय ।
 नि अठिलैहँ लोग सय, पाँटि न लैहँ कोय ॥३॥
 गरी बात बनै नहीं, लाख करी किन कोय ।
 हिमन" बिनरे दूध को, मघे न माखन होय ॥४॥
 हिमन" अती न कीजिए, गहि रहिए निज कानि ।
 हिजन अति फूँजै तऊ, डार पात को हानि ॥५॥
 हिमन" दुख बदन का नय न दूखये दुख
 हा कम अये नय नय नय नय नय
 हिमन" नय नय नय नय नय नय नय
 नय नय नय नय नय नय नय नय

तिन कर संग सदा दुखदाई ।

जिमि कपिलहि घालै दरदाई ॥

खलन हृदय अति ताप विशेषी ।

जरहिं सदा पर-संपावे देखी ॥

जहँ कहूँ निन्दा सुनहिं पराई ।

हर्षहिं मनहुँ परो निधि पाई ॥

बैर अकारन सब काहू सो ।

जो कठ हित अनहित ताहू सो ॥ २

भूठ लेना भूठ देना ।

भूठ भोजन भूठ चबेना ॥

बोलाई न घुर बचन जिमि नारा ।

खाय नहा अति हृदय कठो ॥

लोभे ओढ़न लोभे हासन ।

परमोदर पर यमपुर आसन ॥

काहू को जो सुनहिं बडाई ।

खाम लेहै मनु भूढ़ भाई ॥

जब कहूँ का हसै विरह

सुख हसै मानै जानै ॥

माँह में गुन विरह न जानै

पानु पद पद पद पद ॥

विद्या विनय निपुण गुण शीला ।

खेलेंहि खेल सकल नृपलीला ॥

करतल घाय धनुष अति सोहा ।

देखत रूप चराचर मोहा ॥

बन्धु सखा सब लेंहि बुलाई ।

वन मृगया नित खेलहिं जाई ॥

पावन मृग मारहिं जिय जानो ।

प्रतिदिन नृपहि दिखावहिं आनी ॥

अनुज सखा संग भोजन करहीं ।

मातु पिता आशा अनुसरहीं ॥

जेहि विधि सुखी होहिं पुरस्योग ।

करहिं कृपानिधि सोइ संयोग ॥

प्रातकाल उठि के रघुनाथा ।

मातु पिता गुरु नाबहिं माया ॥

आयसु मांगि करहिं पुरस्काजा ।

देसि चरित दरबहिं नन राजा ॥

कोशल पुरबासी नर, मारिष्टुन्द अरु बाह्य ।

मायहु ते प्रिय लाग्यो, सब कहै राम वृपाल ॥

मारोच-वध ।

७-मारोच-वध

(रत्नायट से)

हेहि वन निकट दशानन गयऊ ।

तब मारोच कपट मृग भयऊ ॥

अति विचित्र कह्यु धरनि न जाई ।

कनक-देह नदि रचित बनाई ॥

सांता परम रुचिर मृग देखा ।

झंग झंग सुमनाहर बेपा ॥

सुनहु देव रघुवीर कृपाला ।

यहि मृग कर अति सुन्दर छाहा ॥

सत्यसथ प्रभु वध कर एही ।

आनहु चर्म कहा वैदही ॥

मृग विभक्ति कर परकर बाँधे ।

करन करन करन करन करन ॥

करन करन करन करन करन ॥

करन करन करन करन करन ॥

करन करन करन करन करन ॥

करन करन करन करन करन ॥

करन करन करन करन करन ॥

करन करन करन करन करन ॥

नृपहिं वचन त्रिय नहिं त्रिय प्राना ।

करहु दात पितु-वचन प्रमाना ॥

करहु साँत धरि भूप रजाई ।

हैं तुन कहैं सब भाँति भलाई ॥

परगुराज पितु-आज्ञा राखी ।

नारी नातु लोक सब सारखी ॥

वनप यथाविधि यौवन दयऊ ।

पितु आज्ञा अथ अपरा न भयऊ ॥

अनुचित उचित विचार तजि, जो पालहिं पितु दैन ।

वे मानन सुख सुपरा के, बसहिं अनरपविन्देन ॥

अवशि नरेश वचन फुर करहु ।

पालहु प्रजा शोक परिहरहु ॥

सुरपुर नृप पाइहि परिषेध ।

तुन कहैं सुख सुपरा नहिं दोष ॥

वेद विदित सम्मत सबही का ।

जेहिं पितु देश सो पावे दोषा ॥

करहु राज परिहरहु गलाना ।

मानहुँ मोर वचन दित जाना ॥

सुने मुख मरव राम बैकुण्ठ

अनुचित कहैं न कहन वचन

नृपदिं वचन प्रिय नहिं प्रिय प्राना ।

करहु ताव पितु-वचन प्रमाना ॥

करहु सांत घरि भूप रजाई ।

हैं तुन कहैं सब भांति भलाई ॥

परशुराम पितु-प्राप्ता राखी ।

मारो नातु लोक सब साखी ॥

वनप ययातिहि यौवन दयऊ ।

पितु प्राप्ता अप अयश न भयऊ ॥

अनुचित वचित विचार तजि, जो पालहिं पितु बैन ।

उं भाजन सुख सुयश के, बलहिं अनरपति-येन ॥

अवशि नरेश बचन पूर करहु ।

पालहु प्रजा शोक परिहरहु ॥

सुरपुत्र नृप पाइहि परिदोष ।

तुम कहैं सुदृढ सुयश नहिं दोष ॥

उंद विदित नमन सबही का ।

उंदि पितु देह से पावे होका ॥

करहु सब नरेश बचन पूर करहु ।

पालहु प्रजा शोक परिहरहु ॥

सुरपुत्र नृप पाइहि परिदोष ।

तुम कहैं सुदृढ सुयश नहिं दोष ॥

नृपहिं वचन प्रिय नहिं प्रिय प्राना ।

करहु ताव पितु-वचन प्रमाना ॥

करहु सोस धरि भूप रजाई ।

है तुम कहैं सब भाँति भलाई ॥

परशुराम पितु-आज्ञा राखी ।

मारी मातु लोक सम साखी ॥

तनय ययातिहि यौवन दयऊ ।

पितु आज्ञा अघ अयश न भयऊ ॥

नुचित उचित विचार तजि, जो पालहिं पितु धैन ।

भाजन सुख सुयश के, बसहिं अमरपति-ऐन ॥

अवशि नरेश वचन कुर करहु ।

पालहु प्रजा शोक परिहरहु ॥

सुरपुर नृप पाइहि परितोषू ।

तुम कहैं सुकृत सुयश नहिं दोषू ॥

वेद विदित सम्मत सबही का ।

जहि पितु दंड से पावे टोका ॥

करत न न रिहरतु गलाना

मानहुँ मेरे वचन जित जना ॥

न नरेश अथवा राजा वैदिक

अनुचर कहैं न नरेश अथवा

पितु सुरपुर सिपरान बन, करन कहहु मोहिँ राज ।
यहि वे जानहु नौर हिव, कै आपन बड़ काज ॥

दिव इनार सिपरति सेवकाई ।

तो हरि लोन नातु कुटिलाई ॥

नै अनुमान दोख मन माहो ।

आन बपाय नौर दिव नाहो ॥

शोक समाज राज केहि लेखे ।

लखन-रान सिप-भद दिनु देखे ॥

जाते रान पहुँ आपनु देह ।

एकादि भंक नौर दिव पेहू ॥

मोहि समान को पान निवालो ।

जेहि लुगि सोप-रान बनवालो ॥

राय रान कहै कानन दोन्हा ।

बिहुरत गनन अनरपुर कोन्हा ॥

मै शठ नव अनरथ कर देनू ।

बैठि हाव नव लुनवै मयेनू ॥

प्रेम लुनवै प्रेमक अवतू

प्रेम नद नदी जग करनू

... कहे कहवै कहवै कहवै

... नव नव कहवै कहवै



